निरंजन श्रोत्रिय की कविताएं

जमानत

हर दुर्दांत अपराधी को मिलेगी जमानत
बस थोड़ा रसूखदार हो
खतरनाक न हो वह सिंहासन के लिए

शर्तिया मिलेगी जमानत
हर बलात्कारी, डकैत और हत्यारे को
जमानत होती ही मिलने के लिए है
बस अब निकम्मे कवियों की बात न करें
वे बोझ हैं राज्य पर अब
उन्हें जमानत मंजूर नहीं
भले ही वे नितांत बूढ़े निशक्त और बीमार हों उनकी कविताएं तंत्र के लिए खतरनाक हैं इसलिए वे भी खतरनाक!
(दरअसल सत्ता को यह मुगालता है)
मैं इस मुगालते पर खुश होता हूं
क्या बढ़िया है यह मुगालता भी जहांपनाह का यदि कवि सीखचों में हों कैद
तो कविता भी होगी ही।

जीवन

उच्छवास नि:श्वास और
हृदय स्पंदन ही जीवन के चिह्न नहीं हैं

मटर छिलके हुए
आंख बचाकर जो दाने मुंह में डाले जाते हैं
वो है जीवन।

कर्ज़

बिटिया की गोद में लेटे हैं पिता
जैसे धरती की गोद में लेटता है आकाश
जैसे मिट्टी की छांव में उगती है फसल
जैसे मां की गोद में सोती है नींद

बिटिया लौटाती है सारा ममत्व सूद समेत
घर है कि उबर नहीं पाता जिंदगी भर
बिटिया के कर्ज़ से।

बुद्ध-काल में मांसाहार की प्रथा

आचार्य धर्मानंद कोसंबी,
'पार्श्वनाथ का चातुर्याम धर्म'

तत्कालीन वस्तुस्थिति दिखाने के लिए 'पुरातत्त्व' नामक त्रैमासिक पत्रिका में मैंने एक लेख लिखा। उस लेख में मैंने प्रमाणों के साथ बतलाया कि उस समय के सभी प्रकार के श्रमणों में मांसाहार प्रचलित था और उसी लेख में कुछ हेरफेर करके 'भगवान बुद्ध' पुस्तक का 11वाँ अध्याय लिखा। कुछ दिगम्बर जैनों ने यह अध्याय पढ़ा और उन्होंने यवतमाल (विदर्भ) में एक संस्था की स्थापना करके उसके द्वारा मुझ पर निंदा-निषेध की बौछार शुरू कर दी और अदालत में नालिश करने की भी धमकी दी। अंत में मैंने नागपुर के 'भवितव्य' (साप्ताहिक) में एक पत्र प्रकाशित करके अपने आलोचकों को स्पष्ट उत्तर दे दिया। तब से विदर्भ में चलने वाला वह आंदोलन ठंडा पड़ गया।

पर हमारे सनातनी जैन भाई चुप नहीं बैठे। सन 1944 में कलकत्ते से लेकर काठियावाड़ (सौराष्ट्र) तक अनेक सभाएँ करके उन्होंने मेरे निषेध के प्रस्ताव पास किए। उसमें संतोष की बात यह थी कि आपस में सदा झगड़ते रहने वाले मूर्तिपूजक श्वेताम्बर, स्थानकवासी श्वेताम्बर और दिगम्बर मेरे विरोध के लिए एक हो गए। मेरे साथ वाद-विवाद करने के लिए भी अनेक जैन साधु और गृहस्थ तैयार हुए। उन सबको अलग-अलग उत्तर देना असम्भव था। अत: मैंने उनसे गुजराती दैनिक 'जन्मभूमि' के द्वारा प्रार्थना की कि वे हाईकोर्ट के किसी गुजराती जज को सरपंच चुनें और उनके सामने सारे आक्षेप रखें, तब मैं अपने पक्ष का समर्थन करूँगा। उसे सुनकर सरपंच अपना निर्णय दे दे। यह निर्णय यदि मेरे विरुद्ध हो तो मैं जैनों से जाहिरा तौर पर माफ़ी माँगूँ और यदि उन जैनियों के प्रतिकूल हो तो वह निर्णय समाचार-पत्रों में प्रकाशित कर दिया जाय, जिससे कि भविष्य में यह वाद ही नहीं रहे। पर जैनों को यह बात पसंद नहीं आई और आखिर यह आंदोलन अपने आप ख़त्म हो गया। फिर भी बीच-बीच में कोई-कोई सनातनी जैन अंटसंट पत्र लिखने की तकलीफ़ लेता ही रहता है।

अंधविश्वास से उपजा भगवान

1977 की बात है। मद्रास हाईकोर्ट में एक याचिका आई जिसमें कहा गया था कि तमिलनाडु में पेरियार की मूर्तियों के नीचे जो बातें लिखी हुई हैं, वे आपत्तिजनक हैं और लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाती हैं इसलिए उन्हें हटाया जाना चाहिए। याचिका को खारिज करते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि ईरोड वेंकट रामास्वामी पेरियार जो कहते थे, उस पर विश्वास रखते थे इसलिए उनके शब्दों को उनकी मूर्तियों के पैडेस्टल पर लिखवाना गलत नहीं है।

*पेरियार की मूर्तियों के नीचे लिखा था-
ईश्वर नहीं है और ईश्वर बिलकुल नहीं है।

जिस ने ईश्वर को रचा वह बेवकूफ है, जो ईश्वर का प्रचार करता है वह दुष्ट है और जो ईश्वर की पूजा करता है वह बर्बर है।

पेरियार नायकर के ईश्वर से सवाल :-

1. क्या तुम कायर हो जो हमेशा छिपे रहते हो, कभी किसी के सामने नहीं आते?
2. क्या तुम खुशामद परस्त हो जो लोगों से दिन रात पूजा, अर्चना करवाते हो?
3. क्या तुम हमेशा भूखे रहते हो जो लोगों से मिठाई, दूध, घी आदि लेते रहते हो?
4. क्या तुम मांसाहारी हो जो लोगों से निर्बल पशुओं की बलि मांगते हो?
5. क्या तुम सोने के व्यापारी हो जो मंदिरों में लाखों टन सोना दबाये बैठे हो?
6. क्या तुम व्यभिचारी हो जो मंदिरों में

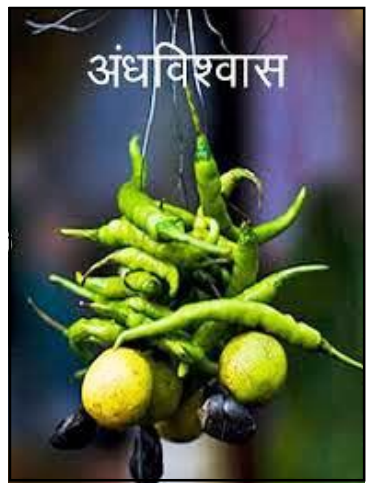

देव दासियां रखते हो ?
7. क्या तुम कमजोर हो जो हर रोज होने वाले बलात्कारों को नही रोक पाते?
8. क्या तुम मूर्ख हो जो विश्व के देशों में गरीबी-भुखमरी होते हुए भी अरबों रुपयों का अन्न, दूध,घी, तेल बिना खाए ही नदी नालों में बहा देते हो?
9. क्या तुम बहरे हो जो बेवजह मरते हुए आदमी, बलात्कार होती हुयी मासूमों की आवाज नहीं सुन पाते?
10. क्या तुम अंधे हो जो रोज अपराध होते हुए नहीं देख पाते?
11. क्या तुम आतंकवादियों से मिले हुए हो जो रोज धर्म के नाम पर लाखों लोगों को मरवाते रहते हो?
12. क्या तुम आतंकवादी हो जो ये चाहते हो कि लोग तुमसे डरकर रहें?
13. क्या तुम गूंगे हो जो एक शब्द नहीं बोल पाते लेकिन करोड़ों लोग तुमसे लाखों सवाल पूछते हैं?
14. क्या तुम भ्रष्टाचारी हो जो गरीबों को कभी कुछ नहीं देते जबकि गरीब पशुवत काम करके कमाये गये पैसे का कतरा-कतरा तुम्हारे ऊपर न्यौछावर कर देते हैं?
15. क्या तुम मूर्ख हो कि हम जैसे नास्तिकों को पैदा किया जो तुम्हे खरी खोटी सुनाते रहते हैं और तुम्हारे अस्तित्व को ही न ?कारते हैं।

"नास्तिक" होना आसान नही कोई भी "नासमझ" इंसान "ईश्वर" के अस्तित्व को मानकर फ्री हो जाता है उसके लिए उसे "बुद्धि"की जरुरत नही होती परंतु नास्तिक होने के लिए "दृढ विश्वास और साहस" की जरूरत होती है ऐसी "योग्यता" उन लोगो के पास होती है जिनके पास "प्रखर तर्क बुद्धि" होती है "अंधश्रद्धा" ऐसा "केमिकल" है जो इंसान को "मूर्ख" बनाने मे काम आता है !

- साइबर नजर

व्यंग्य / अंधभक्त का इलाज

भक्त ने पूछा- बडा ज्ञान-ज्ञान रटते रहते हो..इस श्लोक का अर्थ बताओ..

एरिक तम नपाम्रधू
एरिक तम नपाद्यम

मैंने अपने ज्ञान प्रसार खोल दिये..
इस श्लोक का अर्थ तो
क्या..श्लोक भी कहीं नहीं मिला..
थक हार कर..भक्त से ही पूछाद्दयह
श्लोक तुमने कहाँ पढ़ा?

उस ज्ञानी ने मुझे बगल वाले
आफिस के शीशे के दरवाजे सामने
ले जाकर खड़ा कर दिया जिसपर
लिखा था-
एरिक तम नपाम्रधू
एरिक तम नपाद्यम

मैं असमंजस में
कांच के दरवाजे से अंदर गया
और उस ओर से पढ़ा, लिखा था-
धूम्रपान मत करिए
मद्यपान मत करिए

बाहर आकर मैंने..
भक्त को..चप्पल टूटने तक मारा.

- साइबर नज़र

एक पुरानी कहानी / नया विज्ञान

असग़र वजाहत

- देखो हमने इतिहास- भूगोल बदल डाला । अब हम विज्ञान बदलने जा रहे हैं। अब हम सिद्ध करने जा रहे हैं कि हमारे देश में आज से 50000 साल पहले सुपरसोनिक जेट से अधिक तेज चलने वाले वायुयान थे। हमारे देश में प्लास्टिक सर्जरी लाखों साल पहले हुआ करती थी।

न्यूटन कहता है कि पृथ्वी में शक्ति है । यह गलत है।हम कहते हैं कि आकाश में शक्ति है। न्यूटन कहता हैं किसी चीज को ऊपर फेंको तो वह नीचे गिर जाएगी। हम कहते हैं कि किसी चीज को ऊपर फ़ेकों तो आकाश में चली जाएगी। देवलोक में चली जाएगी। देवलोक में बड़ी शक्ति है।

हम आज यही सिद्ध करेंगे। उसके चेले एक भारी पत्थर ले आए। उसने पत्थर को दोनों हाथों से उठाकर आसमान की तरफ फेंका। पत्थर ऊपर जाने लगा। तालियों की गड़गड़ाहट और बढ़ गई। जय जय कार के नारे लगने लगे। बहुत शानदार मंच लग गया। फूल और बैनर पोस्टर लग गए। लाखों की भीड़ आ गई। स्टेज पर 'नैटंकी' शुरू हो गई।

अचानक देखा गया की आसमान में उछाला गया पत्थर बहुत तेजी से नीचे आ रहा है। जैसे जैसे वह नीचे आ रहा है वैसे वैसे उसका आकार बढ़ता जाता है। लोगों ने इधर-उधर भागने की कोशिश की। मंच से नेता कूदे। भागो ,बचाओ-बचाओ की बहुत सी आवाज़ें आने लगीं है लेकिन ऊपर से गिरने वाला पत्थर इतना बड़ा और इतना भारी हो गया था कि पूरा मंच और जय जयकार करने वाले सभी लोग उसके नीचे आ गए हैं।

कभी अपवित्र न होने वाली वस्तु

एक पण्डित जी एक दिन एक बच्चे से उलझ गये। बच्चे ने भी एक प्रश्न दाग दिया कि, "वो कौन-सी वस्तु है, जो कभी अपवित्र नहीं होती..... ?"

पण्डित जी टोपी उतार कर पसीने-पसीने हो गये, मगर उस बच्चे के प्रश्न का जवाब नहीं दे पाये।

आखिर, हार मान कर बोले, चल तू बता।

बच्चे ने कहा कि कभी न अपवित्र होने वाली वस्तु है, टैन्ट हाउस के गद्दे, जिसे.....

हिन्दू,-मुसलमान से ले कर पण्डित, हरिजन, कुम्हार, डोम और बाल्मीकि सभी धर्म के लोग इस्तेमाल करते हैं।

ये गद्दे मैयत से लेकर पूजा पण्डाल तक और धार्मिक कथा से ले कर उठावनी तक हर मौके पर बिछते हैं।

इनको कोई सूतक भी नहीं लगता। बाराती भी इन गद्दों पर सोम-रस पीने के बाद वमन करते हैं।

छोटे बच्चों को सुविधानुसार इन पर पेशाब करा दिया जाता है । इतना ही नहीं, इन पर बिछी चादरों से जूते भी चमका लिये जाते हैं ।

हद तो तब होती है, जब हलवाई इन चादरों में पनीर का चक्का लटका देता है ।

उसी पनीर से क्या मजे का मटर-पनीर बनता है....
पण्डित चारों खाने चित था.....!!
बच्चा पण्डित जी पर पानी के छीटे मार रहा था.....!!

- डॉक्टर रणवीर सिंह दहिया